International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

"माण्डव की जल प्रबंधन व्यवस्था का ऐतिहासिक विश्लेषण"

शोधार्थी – डॉ. शैफाली राजवाल

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

➢ **सारांश**

प्रायः ऐसा कहा जाता है कि प्राचीन सभ्यताएं किसी न किसी नदी किनारे ही बसती रही है। भारत में मध्यप्रदेश स्थित प्राचीन और ऐतिहासिक नगरी धार जिले का मांडव इसका अपवाद रहा है। मांडव के आसपास कोई नदी नहीं रही है, लेकिन यहां के तत्कालीन समाज ने अपनी खास तकनीकों के माध्यम से अद्भुत जल संरचनाएं तैयार की, जिनकी वजह से जल प्रबंधन की दुनिया में 'मांडव' प्रेम की नगरी के अलावा भी अपनी एक अलग पहचान रखता है। मांडव में जल प्रबंधन के लिये प्राचीन समाज ने सभी आधुनिक तकनीकों को सदियों पहले ही उपयोग करके छोड़ दिया था। बांधों वाले प्रयोगों को यहां आजमाया जाता रहा है। आज के बहुचर्चित रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को तत्कालीन समाज ने महलों की शान बनाकर रखा था। खेत का पानी खेत में और गांव का गांव में इस आधुनिक नारे को भी तत्कालीन समाज-महलों का पानी महल में के रूप में अमल में लाता रहा है। तत्कालीन समाज ने जलप्रबंधन की तकनीकों के माध्यम से इस बिंदु को रेखांकित किया कि समाज यदि दृढसंकल्पित है, तो नदी से दूर वर्षा जल की बूंदों के सहारे भी सभ्यताएं विकसित हो सकती है।

Key word:- माण्डव, जल प्रबंधन व्यवस्था, आधुनिक तकनीकों,

➢ **प्रस्तावना**

माण्डव को यह पहचान भी इसे दुनिया के परम्परागत पानी संचय के विरले उदाहरणों के बीच महलों जैसी स्थिति में ही रखती है। 8वीं शताब्दी से इसके इतिहास की शुरुआत मानी जा सकती है। कालखण्डों ने माण्डव को सभी तरह के वक्त दिखाए। इमारतें, किले बने... तो युद्ध में गिरे भी...! कहते हैं, कभी यह भारत का एक ऐसा शहर था... जिसमें सौ बाजार हुआ करते थे. और आज के मुम्बई... दिल्ली... कलकत्ता की भाँति लोग इसे देखने भी आते थे! ...और आज- खण्डहरों का शहर- इसे नाम दे दिया गया है।

आमतौर पर यह किंवदन्ती प्रचलित है कि जितनी भी पुरानी सभ्यताएँ या शहर बसे हैं, वे किसी नदी के किनारे पाए जाते हैं- ताकि पानी और जीवन के रिश्तों को आँच न आए। लेकिन, यहाँ के इतिहास पुरुषों और समाज के लिये क्या कहा जाए कि - पहाड़ी पर बसे इस पुरातनकालीन समृद्ध विरासत वाले क्षेत्र में कोई नदी नहीं बहती है.! प्रश्न उठता है- फिर पानी...? इसी का जवाब बताता है कि तत्कालीन समाज के ज्ञान, समझ, दूरदृष्टि और आत्मविश्वास का नाम ही उस काल में पानी की कहानियों है...| जो

आज भी माण्डव में देखी जा सकती है. उस 'पर्यटक' को दाँतों तले ऊँगली दबाने पर भी मजबूर करती है, जो तमाम अत्याधुनिक साधनों के साथ अन्तरिक्ष में कुलांचे लगा रहा है, लेकिन अपने परिवेश और इसके साथ आत्मीय सम्बन्धों का पानी- दोनों चुका है। तब के 'पानीदार' माण्डव की आज स्थिति क्या है?

माण्डव का जल प्रबंधन - सभी आधुनिक तकनीकों को सदियों पहले ही करके छोड़ चुका था। सरदार सरोवरों या नर्मदा सागर जैसे बाधों वाले प्रयोगों को यहाँ आजमाया जाता रहा है। आज का बहुचर्चित रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम यहाँ की शान हुआ करता था। पहाड़ से नीचे उतरते पानी को रोकने के लिये बनाए कई तालाब आज भी आपको तत्कालीन तकनीकी को समझा सकते हैं। आज के साइफन सिस्टम को उस काल में चुटकियों में तैयार कर लिया गया था।

1.1 बाजबहादुर महल में स्थित कुंड

जल संग्रहण के लिये तैयार की गई बावडियों केवल पानी संग्रह का स्थान नहीं, बल्कि सुरक्षित महलनुमा 'वातानुकूलित' बरामदा वाली और जीवन रक्षक जैसी उपाधियों से विभूषित रही हैं। आज का 'लिफ्ट सिस्टम' वे आजमा लेते थे। रानी साहिबान के लिये स्नानगृहों की व्यवस्थाएँ भी उत्कृष्ट जल प्रबन्धन की मिसाल प्रस्तुत करती है। पानी की स्वच्छता के लिये फिल्टर तकनीक भी मन मोहने वाली रही है।

जल संचय अभियान में आज के नारे 'गाँव का पानी गाँव में, खेत का पानी खेत में' को वे सदियों पहले- 'महल का पानी महल में जैसे माइको लेवल पर सफलतम प्रयोग कर चुके थे। वर्षा की बूँदों की सही मायने में वे मनुहार करते थे और इसे जमीन के सुकून का आधार बना चुके थे। पानी की किसी बूँद को बेकार नहीं बहने दिया जाता था तब एक ही मकसद था - पानी रोको....! और इसी मकसद के सहारे माण्डव इस किंवदन्ती को झुठला सका, कि समाज यदि दृढ संकल्पित है तो केवल वर्षाजल से, बिना नदी के किनारे भी आत्मशक्ति के साथ सभ्यताएं जिन्दा रह सकती हैं।

माण्डव, विन्ध्याचल पर्वत माला के आखिरी छोर पर बसा है। उत्तर से दक्षिण के बीच यह मालवा क्षेत्र का प्रमुख सत्ता केन्द्र रहा है। माण्डव के इतिहास को चार भागों में बाँटा जा सकता है- (1) परमार काल 800 से 1300 तक। (2) मालवा सुल्तान काल 1300 से 1535 तक। (3) मुगल काल 1536 से 1725 तक। (4) मराठा काल 1725 से 1947 तक। यहाँ राजा भोज, राजा मुंज से लगाकर तो सम्राट अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ का आधिपत्य रहा। कहते हैं, यहाँ 40 तालाब, 70 तत्कालीन तकनीक के स्टॉपडैम और 12 सौ बावडियाँ व कुएँ थे। जल प्रबन्धन की अनेक मिसालें यहाँ अपनी-अपनी तरह की तकनीकें प्रदर्शित करती है।

माण्डव के पूर्व हिस्से में सात सौ सीढ़ी नामक स्थान है, जो तत्कालीन समय में जल संरक्षण की अनूठी तकनीक प्रस्तुत करता है। यह ऐसा स्थान है, जहाँ दोनों ओर से 350 सीढियाँ नीचे की ओर जाती हैं- इसीलिये इसका नाम सात सौ सीढी पड गया। यहाँ अनेक नालों का पानी आता है। तत्कालीन शासकों ने यहाँ पत्थरों का बाँध बनाया था।

बड़े पैमाने पर यहाँ पानी को रोका जाता था। यहाँ रहट प्रणाली से पानी लिफ्ट किया जाता था। रहट का पानी बैलो, ऊँट घोडे आदि के माध्यम से डिब्बों के द्वारा बाँध से ऊपर खींचा जाता रहा है। इतिहासकारों का मत है कि इस बाँध का निर्माण 13वीं और 14वीं सदी के आसपास हुआ होगा।[5] यानि परमारों के अन्त व सुल्तानों की शुरुआत के दरमियान । परमार शासकों में राजा भोज व राजा मुंज ने मालवा क्षेत्र में अनेक तालाब बनाए।

इस बात पर भी शोध किया जा सकता है कि क्या भोजपुर का तत्कालीन बाँध व माण्डव का यह बाँध एक जैसी सरचनाएँ रही है क्योंकि वह भी लगभग इसी शैली में बनाया गया था। अभी भी इसके अवशेष देखे जा सकते हैं। माण्डव के इस पूर्व भाग में आम जनता निवास करती थी।

लाल बंगला वाले क्षेत्र में अनेक तालाब बने हुए थे। इनमें मुख्य रूप से राजा हौज, भोर, लम्बा, समन, सिंगोडी व लाल बगले का तालाब आदि हैं। इनका पानी ओवरफ्लो होकर एक-दूसरे में जाता रहता था। इन तालाबों के सूख जाने पर 700 सीढी से पानी लिफ्ट कर इनमें डाला जाता था। इस आबादी वाले इलाके में अनेक बावड़ियाँ व कुएँ थे, जो इस पूरे सिस्टम के कारण जिन्दा रहा करते थे। अभी भी लाल बंगला क्षेत्र के जंगलों में हजारों मकानों की नीवों के अवशेष देखे जा सकते हैं। यह तकनीक डैम व तालाबों पर आधारित रही|

अब कुछ उदाहरण तत्कालीन समय में वर्षा जल को महलों अथवा आसपास के स्थानों में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग पद्धति द्वारा संचित करने के देखते हैं। माण्डव किले का क्षेत्रफल 48 मील है। यह देश के बड़े किलों में से एक है। इसके उत्तरी भाग में रानी रूपमति महल, बाजबहादुर महल, रेवा कुण्ड आदि का जल प्रबन्धन देखने लायक है।

रानी रूपमति महल उस समय में वॉच टॉवर के रूप में भी उपयोग में लाया जाता था। यह पहाड़ी के शीर्ष पर है। कहते हैं, बाजबहादुर की प्रेमिका रानी रूपमति यही से हर रोज सुबह दूर दिखती नर्मदा मैया के दर्शन करने आती थी। दरअसल रूपमति धरमपुरी के राजा की बिटिया थी। अकबर के प्रशासक बाजबहादुर का संगीत प्रेम ही रुपमति से भी प्रेम का कारण बना।

इस महल को रूपमति के नाम से जानने लगे। रूपमति महल में पानी प्रबंधन महल का पानी महल की अवधारणा पर आधारित था। यहां छत पर आई वर्षाजल की बूंदों को सहेजकर नालियों के माध्यम से पहली मंजिल पर उतारने की व्यवस्था है। इस पानी को पहले हौज में एकत्रित किया जाता था । यहाँ कोयले व रेती के जरिए इसको फिल्टर किया जाता था। यहां से पानी एक बड़े हौज में एकत्रित होता था। यहाँ सैनिक इसका उपयोग पीने के लिये करते थे। सदियों का वक्त बीतने के बावजूद इस व्यवस्था को आसनी से उसी स्थिति में समझा जा सकता है।

रानी रूपमति महल के सामने जल प्रबन्धन की एक और मिसाल है - रेवा कुण्ड। यहाँ दो कुण्ड है छोटा व बडा। इन कुण्डो में आज भी पानी देखा जा सकता है। बड़े कुण्ड में नीचे उतरने के लिये बावडीनुमा संरचना की तरह सीढियों बनी हुई है। रेवा कुंड के पास एक धर्मशाला है। जहाँ बाहर से आने वाले अतिथि उस काल में रुका करते थे। इसकी छत पर आया बरसात का पानी भी रेवा कुण्ड स्तोत्र रहा है। नालियों की पूरी प्रणाली के माध्यम से पहले पानी छोटे कुण्ड में आया करता था। यहां फिल्टर के बाद बड़े कुंड में उतारा जाता था। कुछ पानी रानी रूपमति महल के ओवर- फ्लो सिस्टम से भी यहाँ आता था।

रेवा कुण्ड में पानी आवक के साथ-साथ जावक की भी प्रणाली रही है। इसके सामने की ओर बना है बाजबहादुर महतः रेवा कुण्ड का पानी लिफ्ट कर बाजबहादुर महल में पहुँचाया जाता था। रहट प्रणाली से डिब्बों के माध्यम से पानी ऊपर आकर एक हौज में डाला जाता था। यहाँ पत्थरों की पाइप लाइन प्रणाली मौजूद थी। इन्हीं के माध्यम से पानी महल के भीतर जाता था। यहाँ एक कुण्ड भी बना हुआ है। किंवदन्ती है कि बाजबहादुर इस महल में संगीत की प्रतिस्पर्धाएं कराता था।[9]

इन तीनों स्थानों की प्रणाली स्वतन्त्र अस्तित्व लिये हुए थी। यहाँ रेवाकुण्ड को वापस इसकी पुरानी पहचान दिलाए जाने की जरूरत है। यहाँ अन्तिम संस्कार भी किया जाता है। कुण्ड फिलहाल दुर्दशा का शिकार हो चला है। माण्डव के गाइड श्री राधेश्याम चन्देत्तरी कहते है. यहाँ पानी की चिन्ता करने वाले लोगों का कहना है कि माण्डव में पानी का समृद्ध इतिहास रहा है। यदि हर जलस्रोत का बेहतर रखरखाव हो, पर्याप्त खुदाई की जाए व क्षेत्रों की भी देखभाल की जाए तो माण्डव में पुनरु इतने पानी का प्रबन्ध हो सकता है कि धार को भी आपूर्ति की जा सकती है।

मांडव में आप जैसे-जैसे इमारतों को देखते आएँगे जल प्रबन्धन के नए-नए तरीके आपको दिखाते जाएंगे. यहाँ का शाही महलों वाला इलाका भी सदियों पुराने दिलचस्प जल प्रबन्धन से भरा पड़ा है।

जब हम जहाज महल में प्रवेश करते हैं तो इसका नाम सार्थक होता नजर आता है। इसके एक और मुंज तालाब है तो दूसरी ओर कपूर तालाब। मुंज तालाब का नाम धार के परमार शासकों में राजा मुंज के नाम पर है। वे तालाब बहुत रुचि के साथ बनाया करते थे। इस नाम से धार व उज्जैन में भी तालाब है। कपूर तालाब के बारे में किंवदन्ती है कि सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी ही रानियों के स्नान के लिये यह तालाब काम में आता था। सुल्तान इसमें कपूर व अन्य जड़ी-बूटियों डलवाता था ताकि इन रानियों के बाल सफेद नहीं होने पाए।

दोनों तालाबों के बीच में महल-जहाज जैसा लगता है। यहाँ का सम्पूर्ण जल प्रबन्धन भी अद्भुत है। जहाज महल में सुरजकुण्ठ स्थित है। जहाज महल की छत का पानी सूरजकुण्ड में जाता था। इसके पूर्व फिल्ट्रेशन भी होता था। कपूर तालाब में वर्षाजल का पानी एकत्रित होता था। सूरजकुण्ड-कपूर तालाब व मुंज तालाब के बीच में है | यह स्टोरेज टैंक का भी काम करता। जब कपूर तालाब में पानी की जरूरत होती तो नाली प्रणालियों के माध्यम से पानी सूरजकुण्ड से कपूर तालाब में पहुँच जाता। इसी तरह तवेली महल का पानी भी नालियों के माध्यम से कपूर तालाब में चला जाता।

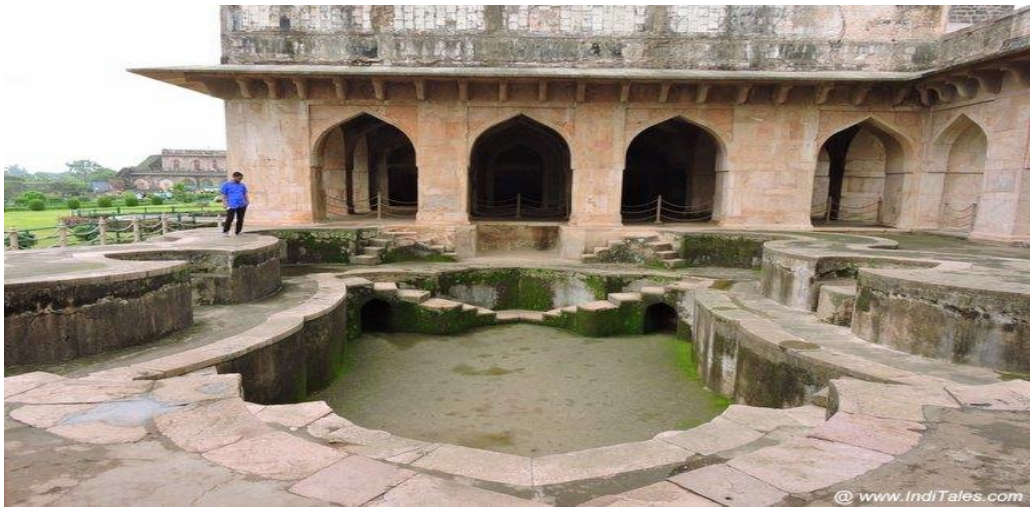

1.2 जहाज महल में स्थित कुंड

यह तालाब काफी सुन्दर है। आर्चेस बने हुए हैं। बीच में प्लेटफार्म भी है। सूरजकुण्ड मुंज तालाब के साथ भी इसी तरह जुड़ा है। शाही महलों का भीतरी जल प्रबन्ध भी कम दिलचस्प नहीं रहा है। यहाँ तालाबों से पानी रहट द्वारा एक खास ऊँचाई पर बने हौज में पहुँचाया जाता था। यहाँ से फोर्स के साथ पानी नीचे से ऊपर व आगे जाता था। पूरे पैलेस में भीतर-ही-भीतर ठंडे व गरम पानी की रनिंग व्यवस्था थी। गरम पत्थरों के ऊपर से पानी को बहाया जाता था। यह पानी हमाम व स्वीमिंग पूल तक इस्तेमाल होता था। ... और तो और उस जमाने में स्टीम बाथ और सन बाथ की व्यवस्था भी कर रखी थी।

हिंडोला महल के पास चम्पा बावड़ी बनी है। इसका आकार चम्पा के फूल की तरह । इसमें भी छत का पानी फिल्टर के बाद संग्रहित किया जाता था। यह तीन मंजिला और उस जमाने से वातानुकूलित बरामदे वाली है। इस तरह की विशेषता महिदपुर की ताला - कुंची बावड़ी, इन्दौर की लालबाग वाली चम्पा बावड़ी, नरसिंहगढ़ की उमेदी बावड़ी और ब्यावरा की मंडी-बावडी सहित अन्य बावडियों में भी पाई जाती रही है। लेकिन, चम्पा बावड़ी की यह विशेषता है कि इसके भीतर से गुप्त रास्ते बने हुए हैं।

1.3 हिंडोला महल में स्तिथ चम्पा बावड़ी

बाहरी आक्रमण के समय रानियाँ इसमें छलांग लगाकर गुप्त रास्तों से निकल जाया करती थीं। मुंज तालाब में जल महल भी बना हुआ है। पानी से घिरा हुआ। किंवदन्ती है कि रानियों की प्रसूति यहाँ हुआ करती थी। यहाँ भी छत का पानी संग्रहित होता था। यहीं बने हिंडोला महल में भी छत के पानी को बावड़ी में उतार दिया जाता था ।

यहाँ से थोड़ी दूर गदाशाह महल के पास दो बावडियाँ और हैं- उजाली और अन्धेरी बावडी। उजाली 90 फीट गहरी है। यहाँ भी चमकिले पत्थर लगे हैं। यह भी तीन मंजिला है। गदाशाह महल (तत्कालीन समय में बाजार कॉम्प्लेक्स) की छत का पानी फिल्टर के बाद इस बावड़ी में उतारा जाता था। इस पानी का सभी उपयोग करते थे। इसी के पास बनी है- अन्धेरी बावड़ी। बाहर से तो यह किसी महल का आभास देती है। यह पूरी तरह ढँकी हुई है।[11]

गदाशाह के साथी व्यापारी यहाँ गर्मी के दिनों में ठंडी का आनन्द लेने के लिये बावड़ी में उतरा करते थे। इसमें भी तत्कालीन कॉम्प्लेक्स के एक हिस्से का छत वाला पानी संग्रहित किया जाता था। इस बावड़ी को सुरक्षा की दृष्टि से ढका गया था- ताकि बाहरी आक्रमण के समय इसमें कोई विषाक्त पदार्थ न मिला दे। यहाँ एक बात और बता दें- धार से माण्डव के बीच- 35 चौकियाँ

बनी हुई थीं। वहाँ भी तालाब और बावड़ी की व्यवस्था, इसी तर्ज पर की गई थी ताकि यहाँ के सैनिकों को भी पानी के लिये कहीं भटकना न पडे...!

माण्डव का जितना लम्बा व समृद्ध इतिहास है, उतनी ही किंवदन्तियाँ भी हैं। लेकिन, जब समाज का पानी से प्रेम खत्म हुआ तो माण्डव खण्डहरों का शहर बन गया। कभी आबाद और बरसात के मौसम को छोड़कर यह अब वीरान रहने लगा...!!.

पानी के अनुरागी समाज के लिये तो सम्भवतः माण्डव... पानी और समाज की प्रेम कहानी के रूप में भी जाना जाएगा|

- संदर्भ सूची

1. पुरातत्व सर्वेक्षण रिपोर्ट 1902-03, Page - 11

2. Luard C. E., Gazetteer of the Dhar state, Bombay, 1908, Page - 308

3. पुरातत्व सर्वेक्षण रिपोर्ट "पश्चिम भारत' 1904, Page - 64

4. Elliot H. H., The history of India as told by its own historians, 1867-77 , Page - 112

5. Price D., Memiors of the emporer Jahangir, 1829. Page - 24

6. Foster W., The journal of John Fourdain, 1905. Page - 114

7. Baytey E. C., The history of Gujrat, 1886. Page- 23

8. Terry E., Voyage to East India, 1655 (reprint 1977), page. 39

9. चतुर्वेदी, के. माण्डव की जल संरचना, 2018 पृ - 5

10. Yajdani G., Mandu (The city of joy) – 1929 , पृ – 10-11

11. https://www.mptourism.com/destination-mandu.php